विशेष

12

सारंगी 2
हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह प्रसन्नता का विषय है कि कक्षा 2 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *सारंगी* (भाग 2) आपके हाथ में है। *सारंगी* (भाग 2) का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशानिर्देशों को ध्यान में रखा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विकसित बुनियादी स्तर की पाठ्यचर्या की अनुशंसाओं को भी इस पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है। आशा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के अनुसार यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने तथा न्यायपूर्ण समाज को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस नीति में बच्चों की शिक्षा में भाषा और साक्षरता विकास को बहुत महत्व दिया गया है। माना जाता है कि भाषा और साक्षरता की ठोस नींव अन्य विषयों को भी दक्षतापूर्वक सीखने में सहायक होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (बुनियादी स्तर) पर बच्चों में भाषा के विकास के साथ-साथ सतत सीखने की कला, समस्या समाधान, तार्किक और रचनात्मक चिंतन के विकास पर भी बहुत बल देती है। इस स्तर पर भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों और गतिविधियों में भारतीय परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्रप्रेम, चरित्र-निर्माण, नैतिकता, करुणा, जेंडर संवेदनशीलता और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को भी समेकित रूप में सम्मिलित करने की अनुशंसा करती है।

आप जानते हैं कि शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक माध्यम है, बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने का, जिनके बीज उनमें पहले से ही विद्यमान हैं। आप सभी से यह आग्रह है कि पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा-कक्ष के इर्द-गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ, उन्हें खुद खोजबीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें अपनी बात कहने के अवसर दें, सही-गलत का निर्णय न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

कक्षा 2 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते समय निम्न बातों का ध्यान रखा गया है—

1. पढ़ने-लिखने की शुरुआत के लिए बच्चों के जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है जिससे यह प्रक्रिया सहज और अर्थपूर्ण हो।

2. भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि जितना अधिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए होता है, उतनी ही तेज़ी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अत: इस पुस्तक में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, नए शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर अलग-अलग संदर्भों में और बार-बार दिए गए हैं।
3. इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं— परिवार, रंग ही रंग, हरी-भरी धरती, मित्रता और आकाश।
4. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा में बच्चों के संदर्भों की वस्तुओं या घटनाओं या व्यक्तियों साथ इस पुस्तक में दी गई पठन सामग्री को जोड़ा जाए। इस हेतु सुझाव भी दिए गए हैं।
5. प्रत्येक पाठ में लगभग सभी दक्षताओं का ध्यान रखा गया है। बच्चों के दृष्टिकोण से पाठों को रोचक बनाने के लिए कार्यों में विविधता लाने का प्रयास किया गया है। मुख्यत: पाठ्यचर्या के लक्ष्य एवं दक्षताओं को ध्यान में रखते हुए इन पाठों का चुनाव एवं सृजन किया गया है।

बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2022) के अनुसार भाषा सीखने-सिखाने के लिए भाषाशिक्षण के चारों स्तंभों पर कार्य करना महत्वपूर्ण है। ये चार स्तंभ हैं— मौखिक भाषा का विकास, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना।

मौखिक भाषा का विकास— बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास और साथियों व जानकार अन्य लोगों (जैसे— बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।

शब्द पहचान— इसमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता, प्रतीकों और ध्वनि का संबंध, लिखित शब्द पहचानना और शब्दों को लिखना शामिल है।

पढ़ना— लिखित सामग्री से अर्थ का निर्माण करना और इसके विषय में आलोचनात्मक या समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।

लिखना— तार्किक और व्यवस्थित तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता।

इस पुस्तक में प्रत्येक विषय के इर्द-गिर्द चुनी गई पठन सामग्री में इन चार स्तंभों को निम्न प्रकार से बाँट गया है—

मौखिक भाषा का विकास

पुस्तक में अलग-अलग भाग हैं, जैसे— 'चित्र और बातचीत', 'कविता', 'आओ कुछ बनाएँ', 'खेल-खेल में' और 'खोजें-जानें'। इन सभी का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में मौखिक भाषा का विकास करना है। इसके साथ-साथ बच्चे मिलकर कुछ बनाते समय एक-दूसरे के विचारों को सुनेंगे, खोजें-जानें क्रियाकलापों के दौरान अपने परिवार एवं समुदाय के लोगों के साथ बातचीत कर कुछ समझने का प्रयास करेंगे आदि। उदाहरण के लिए, 'परिवार' (इकाई 1) के चित्र को देखकर बच्चे आपस में अपने-अपने अनुभवों को साझा करेंगे, अनुमान लगाएँगे, तर्क करेंगे आदि।

मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम है, बच्चों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना। इसके लिए भाषा-शिक्षण के दौरान आवश्यक है कि हम बच्चों की भाषा और उनके पूर्व-अनुभव को स्वीकार करें और उन्हें अपनी बात अपनी भाषा में कहने के लिए प्रोत्साहित करें। बातचीत के अंतर्गत दी गई गतिविधियों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है, बहुभाषिकता। अर्थपूर्ण सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आवश्यक है कि बच्चे अपनी भाषा में खुलकर अपने विचार रख सकें तथा अपनी भाषा का प्रयोग करते हुए ही लक्षित भाषा को सीखें। कक्षा की हर गतिविधि में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।

शब्दों को पहचानना एवं गढ़ना

कक्षा 1 में बच्चों ने अक्षर और ध्वनि का अंतर-संबंध समझते हुए शब्दों को गढ़ना सीख लिया है। ऐसा हो सकता है कि कुछ बच्चों को कुछ अक्षर पहचानने में कठिनाई हो। इस स्थिति में कक्षा 2 में दिए गए पाठों से सरल शब्दों से पहली, दूसरी, अंतिम ध्वनि का अभ्यास करवाया जा सकता है। इसी के साथ शब्द-पहेलियाँ भी दी जाएँ, तो बच्चों को सीखने में आनंद आएगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रथम इकाई 'परिवार' में इन दोनों अभ्यासों को सम्मिलित किया गया है। कक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ऐसे और कार्य नियमित रूप से करवाए जा सकते हैं। कक्षा 2 में संयुक्ताक्षर, जैसे— कि 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ' और 'श्र' पर भी कुछ अभ्यास दिए गए हैं। साथ ही साथ अनुस्वार, चंद्रबिंदु वाले शब्दों को भी सम्मिलित किया गया है।

पढ़ना

'सुनें कहानी', 'मिलकर पढ़िए' और 'कविता' आदि भागों में बच्चों को पढ़ने की विविध दक्षताओं को विकसित करने के अवसर हैं, जैसे— मिलकर पढ़ते समय बच्चे शिक्षक के साथ मिलकर और बाद में अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़ेंगे। पढ़ते समय कहानी के चित्रों को देखकर अनुमान लगाना, फिर कहानी सुनकर बातचीत करना, शब्दों को चित्र रूप में समझना, कुछ प्रश्नों के उत्तर देना आदि से बच्चे 'पढ़ना माने अर्थ गढ़ना' संकल्पना को आत्मसात कर पाएँगे। उदाहरण के लिए, 'माला की चाँदी की पायल' पाठ में प्रश्न दिया गया है कि 'पायल उतारने के अतिरिक्त माला और क्या कर सकती थी?' इस प्रश्न का उत्तर सोचते हुए बच्चे पाठ पढ़ने के साथ अपना अर्थ भी गढ़ सकते हैं।

लिखना

लिखने की शुरुआत चित्रों से होती है और फिर चित्रों के साथ बच्चे शब्द और धीरे-धीरे वाक्य लिखना आरंभ करते हैं। यहाँ प्रयास किया गया है कि बच्चे अपने अनुभवों और विचारों को चित्रों के माध्यम से बताएँ और फिर उन पर कुछ शब्द शिक्षक की सहायता से लिखें। अन्य भाग, जैसे— 'कविता', 'सुनें कहानी' और 'मिलकर पढ़िए' आदि में भी लिखने के अवसर हैं। यहाँ लिपि को समझने और लिखने पर भी बल दिया गया है।

बच्चों में इन सभी दक्षताओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि इन चारों स्तंभों पर नियमित रूप से कार्य हो। अत: इस पाठ्यपुस्तक में पाँच संदर्भों के इर्द-गिर्द पढ़ने, लिखने, शब्द पहचानने और बातचीत

के विविध आयामों को सम्मिलित किया गया है। आइए, इन आयामों के बारे में सविस्तार चर्चा करें।

सृजनशील शिक्षक दी गई पठन-पाठन सामग्री को अत्यंत रोचक और प्रभावी तरीके से बच्चों के साथ मिलकर रच सकते हैं। यहाँ बस कुछ सुझाव हैं। हमें आशा है कि आप अपनी कक्षा में विविधता लाएँगे, बच्चों के संदर्भों के आधार पर शब्दों का खेल, खेल गीत, कविताएँ और कहानियाँ शामिल करेंगे। विविध संसाधनों की सहायता से कक्षा को और भी रोचक बनाएँगे।

बातचीत

इस पुस्तक में लिए गए पाँचों संदर्भों में बातचीत की ढेर सारी संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए, 'रंग ही रंग' में आप बच्चों से नीचे दिए गए प्रश्नों से बातचीत शुरू कर सकते हैं— (जैसे-जैसे बच्चों के उत्तर आएँगे, उस तरह से बातचीत को आगे बढ़ाया जा सकता है।)

आपका सबसे मनपसंद रंग कौन-सा है? क्यों? नीले रंग का नाम सुनने पर आपको किन-किन वस्तुओं के नाम याद आते हैं? हमारे इर्द-गिर्द कौन-कौन से रंग हैं? अगर सारे रंग गायब हो जाएँ तो कैसा लगेगा? अगर केवल एक ही रंग हो तो दुनिया कैसी होगी?

बातचीत की यह गतिविधि हर दिन करवाई जा सकती है। एक दिन में सभी बच्चों को अवसर नहीं मिल पाएगा, अतः प्रतिदिन यह गतिविधि कक्षा में करवाएँ। समय-सारिणी में समूह समय (वृत्त समय) के लिए जगह है। उस समय इस तरह की बातचीत को जगह दी जा सकती है।

सुनें कहानी

इसके अंतर्गत दी गई कहानियों को शिक्षक बच्चों को एक से अधिक बार पढ़कर सुनाएँ। कुछ तरीके इस प्रकार हो सकते हैं—

कहानी पढ़कर सुनाने से पूर्व बच्चों से कहानी के चित्र देखकर कहानी गढ़ने को कहिए। यह कार्य आप बच्चों के छोटे समूह बनाकर करवा सकते हैं। कहानी पढ़ते समय एक या दो प्रश्न बीच में बच्चों से पूछें, जैसे 'आपको क्या लगता है कि कहानी में आगे क्या होगा?' आदि। कहानी के बाद दिए गए 'बातचीत के लिए' प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत कीजिए। यहाँ कोई उत्तर सही या गलत नहीं है, बल्कि प्रयास यह रहे कि बच्चे अपने मन की बात या उन्हें जो समझ में आया वह निःसंकोच कह सकें।

बातचीत के दौरान जो शब्द कहानी और बातचीत में बार-बार आ रहे हैं, उन शब्दों को बच्चों से बोर्ड पर लिखने के लिए कहें, अन्य बच्चों को पढ़ने के लिए कहें। कक्षा 2 में बच्चों से अपेक्षा है कि वे एक शब्द लिखने के साथ-साथ वाक्य पूरा करने से लेकर कुछ वाक्यों को अपने आप लिखना सीख जाएँगे। प्रत्येक इकाई में रिक्त स्थान की पूर्ति करने से लेकर प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखवाने तक का अभ्यास सम्मिलित है।

मिलकर पढ़िए

इस हिस्से में उन कहानियों का चुनाव किया गया है, जिनमें दोहराव है। दोहराव वाक्यों के स्तर पर है। कहानी के कथानक में भी दोहराव है। आपने यह

देखा होगा कि दोहराव में बच्चों को आनंद आता है। दोहराव से बच्चों को अनुमान लगाने में भी सुविधा होती है। इन कहानियों को पढ़ने से पूर्व चित्र दिखाकर बच्चों से बातचीत कीजिए। फिर उँगली रखते हुए बच्चों के साथ मिलकर कहानी पढ़िए। जिन शब्दों का दोहराव है, उन्हें बोर्ड पर लिख दीजिए। उनके चित्र बन पाएँ तो अवश्य बनाइए। फिर, कहानी को पुन: पढ़िए और दूसरी बार पढ़ते समय दोहराव वाले वाक्यों पर बच्चों को अनुमान लगाने को कहिए। कुछ दिनों बाद, छोटे समूह में बच्चों को मिलकर पढ़ने के लिए कहिए। उनका अवलोकन कीजिए। उन्हें जहाँ-जहाँ सहायता की आवश्यकता है, उन शब्दों को नोट कर लीजिए। अगली कक्षा में इन 'शब्दों को आप 'शब्दों का खेल' में शामिल करके इन पर गतिविधियाँ करवा सकते हैं। इन सभी कार्यों का उद्देश्य यह है कि बच्चे दी गई पठन सामग्री को धीरे-धीरे पढ़ना सीख जाएँ। हर बच्चे के सीखने का तरीका और गति अलग-अलग होती है। उन पर किसी भी प्रकार का दबाव बिल्कुल भी न डालें। हाँ, उन्हें सार्थक अवसर अवश्य प्रदान करें और उनका उत्साहवर्धन करें। इस पुस्तक में 'मिलकर पढ़ने' के कई अवसर हैं, क्योंकि इन अवसरों से ही बच्चे पढ़ना सीखते हैं। आप भी पुस्तकालय से, स्तर के अनुकूल पुस्तकें बच्चों को दें।

शब्दों का खेल

कक्षा 1 की तरह ही कक्षा 2 की इकाई 1 में ध्वनि और अक्षरों पर कार्य दिए गए हैं। यहाँ से आगे बढ़ते हुए उलट-पुलट कर दिए गए। अक्षरों से सार्थक शब्द बनाना, शब्दों को सही क्रम में लिखकर वाक्य बनाना आदि की गतिविधियाँ दी गई हैं। कहानी को पूरा करना या चित्र के आधार पर कहानी या कुछ वाक्य लिखना बच्चों से अपेक्षित है। इसके लिए महत्वपूर्ण है कि उन्हें ऐसे अवसर बार-बार दिए जाएँ।

आनंदमयी कविता

बच्चे हाव-भाव के साथ, अभिनय करते हुए कविताओं को गाएँ, जैसा कि हम अपनी कक्षाओं में हमेशा से ही करते आ रहे हैं। कविताओं को चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिख दें। फिर गाते समय बच्चे इन्हें देखकर, शब्दों पर उँगली रखकर भी गा सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर कविताओं का आनंद लेना अति आवश्यक है। इसके सहारे ही कविता शिक्षण-अधिगम के रास्ते पर प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ा जा सकता है। उसके साथ-साथ कविताओं पर चर्चा करना, नई कविताएँ गढ़ना, कविताओं में आए शब्दों के साथ कार्य करना, कविता की पंक्तियों को आगे बढ़ाना आदि के अवसर भी दिए गए हैं।

चित्रकारी और लेखन

बच्चे चित्रों द्वारा स्वयं के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। इन चित्रों में बच्चों की अवलोकन क्षमता, विचार करने के कौशलों के कई प्रमाण मिलते हैं। इसी आशा से लिखना, सीखने की प्रक्रिया में चित्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में 'चित्रकारी और लेखन' को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक गतिविधि संदर्भ आधारित है, उस पर कहानी या कविताएँ बच्चे पढ़ चुके हैं, बातचीत कर चुके हैं। उसके बाद उन्हें चित्रकारी और लेखन का कार्य दिया गया है। बच्चों से आप ऐसे भी किसी कविता या कहानी या अपने मन से

चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। बच्चों को वाक्य लिखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। प्रयास यह हो कि वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति करें। अपनी बातों को लिखने का प्रयास करें। बच्चों के छोटे समूह में भी ये गतिविधियाँ आप करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे से भी बहुत कुछ सीखते हैं।

खोजें-जानें

भाषा शिक्षण को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने, संदर्भ से सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए इन गतिविधियों को शामिल किया गया है। इनसे बच्चों में अपने समुदाय की समझ बढ़ेगी। अपने घर और आस-पड़ोस का भी वे महत्व समझेंगे।

आओ कुछ बनाएँ

इन गतिविधियों का उद्देश्य है कि बच्चे जटिल कार्य के लिए मौखिक निर्देशों को समझें और उसी कार्य के लिए दूसरों को स्पष्ट मौखिक निर्देश भी दे सकें। इस कार्य में कला और भाषा के एकीकरण का प्रयास किया गया है।

खेल-खेल में

यहाँ पर खेल गीत गाना, खेलना, अभिनय करना आदि सम्मिलित किए गए हैं। खेल-खेल में निर्भीक अभिव्यक्ति कर पाने के अवसर देने से बच्चों की झिझक समाप्त होती है वे स्वयं के अनुभव को प्रसन्नता से सबके साथ साझा करने लगते हैं। सीखने-सिखाने में यह सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है।

इस पुस्तक में कुछ अन्य रोचक गतिविधियाँ भी दी गई हैं, जैसे— 'झटपट कहिए', 'आओ बूझें पहेली' आदि। शिक्षक अपने स्तर पर भी इस प्रकार की कुछ और सामग्री खोजें, स्वयं तैयार करें और उपयोग में लाएँ। इन सब के साथ-साथ एक सतत चलने वाला आवश्यक कार्य यह है कि पाठ्यपुस्तक की प्रत्येक इकाई पर कार्य करते हुए शिक्षक स्वयं और बच्चों की सहायता से कुछ अधिगम-शिक्षण सामग्री (एल.टी.एम.) बनाते रहें और उन्हें कक्षा की दीवार पर लगाएँ या अन्य उपयुक्त तरीके से बच्चों के लिए उपलब्ध रखें और उनका उपयोग भी शिक्षण प्रक्रिया में करें। प्रत्येक इकाई में नई सामग्री की आवश्यकता होगी। उपलब्ध सामग्री में निश्चित रूप से कुछ पुस्तकें भी होनी चाहिए और नियमित रूप से बच्चे पुस्तकों के साथ काम करें, समय-सारिणी में इसकी जगह हो।

हमें पूरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक की सामग्री का इसमें दिए उद्देश्यों और निर्देशों को ध्यान में रखते हुए रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।